Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

GoldenResearch Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

GRT

सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय – भावना की प्रासंगिकता

रशिद नजरुद्दीन तहसिलदार

विभाग, कर्मवीर हिरे महाविद्यालय,
गारगोटी, ता. भुदरमड, जि. कोल्हापूर.

सारांश:

हर साहित्यकार युगीन परिवेश के अनुसार प्रासंगिक ही होता है । उसकी हर रचना चाहे वह पौराणिक हो या ऐतिहासिक, उसमें आए तथ्य, प्रसंग एवं घटनाएँ प्रत्यक्ष–परोक्ष रुप में हर युग के लिए प्रासंगिक ही सिद्ध होती है । इसी कारण साहित्य कालातील माना जाता है । सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित भावना की प्रासंगिकता को लेकर जब अध्ययन किया जाता है तब स्वाभाविक तौर पर उनके साहित्य में चित्रित हुई राष्ट्रीय भावना विविध पहलुओं के साथ आज के युग में भी विद्यमान पाई जाती है । राष्ट्रीय भावना को उद्घाटित करनेवाले हर नाटक में वर्तमान युग में राष्ट्र से संबंधीत जितने भी प्रश्न एवं समस्याएँ हैं वह सारे प्रश्न और समस्याएँ तत्कालीन युगीन नाटकों में देखी जाती है । समय की दृष्टि से अंतर भले ही हो किंतु समस्याएँ एवं वातावरण परिवेश के मूल में ज्यादा फर्क नहीं दिखाई देता ।

प्रस्तावना :–

सेठ गोविंददास की राष्ट्रीय भावना से युक्त नाटकों में जिस जाति एवं वर्ण व्यवस्था की अभिव्यक्ति हुई है उसी का अंश वर्तमान युग में भी पाया जाता है । जाति एवं वर्ण व्यवस्था को खत्म करने के लिए सेठ गोविंददास ने कुछ उपायों की चर्चा अपने नाटकों के माध्यम से की है । उसकी आवश्यकता वर्तमान युग में भी महसुस की जा रही है । सांप्रदायिकता और उससे जूडे विवादों को मिटाने की कोशिश उन्होंने जिस सादगी के साथ अपने नाटकों में की है उसके महत्व को किसी भी युग में नकारा नहीं जाएगा । वर्तमान राजनीति में जिस तरह की दुषित प्रवृत्तियाँ प्रवेश कर रही है उसके बीज स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनिति में है, जिसकी चर्चा कर सेठ गोविंददास ने उसका यथार्थ रुप हमारे सामने रखा है । सामाजिक विखंडन की प्रवृत्तियाँ बढ रही है । सेठ जी ने तत्कालीन युग में ऐक्य भावना को प्रस्थापित करने हेतु उपायों की चर्चा की है उसकी प्रासंगिकता आज भी बरकरार है । देशभक्ति की भावना तथा मानवीय गुणों के विकास की दृष्टि से सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से की हुई चर्चाएँ निश्चित रुप से आवश्यकता महसुस कर रही है । आर्थिक विशमता हर युग में रही है । जिसे मिटाने के प्रयास सेठ जी का धर्म रहा है । सांस्कृतिक संवर्धन की दृश्टि से उनके विचारों की उपादेयता पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता । विश्व–बंधुता की भावना को महात्मा गांधी जैसे महापुरुषों ने वाणी दी है । उसके महत्व को पहचानकर सेठ गोविंददास ने विश्वबंधुता की भावना को नए स्वर दिए तथा अपने व्यक्तिगत जीवन में ही नहीं बल्कि साहित्यिक जीवन में भी उन्होंने गांधी विचारों का प्रसार और प्रसार किया है । गांधी विचार कभी अप्रासंगिक सिद्ध नही हो सकते क्यों कि उसके मूल में सारी मानवता के कल्याण की भावना छीपी है । अतः सेठ गोविंददास का राष्ट्रीय भावना से युक्त हर नाटक की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है ।

प्रासंगिकता का सवाल और सेठ गोविंददास के नाटक :

साहित्य की उपादेयता और प्रासंगिकता का सवाल हमेशा चर्चा में रहा है । अन्य क्षेत्रों की तरह साहित्य का क्षेत्र भी उपयोगी और प्रासंगिक रहा है इसे नकारा नहीं जाएगा । साहित्य की हर विधा में तत्कालीन युग का परिवेश, स्थितियाँ प्रसंग एवं घटनाओं के माध्यम से यथार्थता के साथ चित्रित होता है । किसी भी युग में चित्रित हुए तत्य सिर्फ उसी युगीन परिवेश का नही बल्कि भूत, वर्तमान और भविष्य का प्रतिनिधीत्व करनेवाला होता है । अतः साहित्य में चित्रित हुई बाते हर युग को मार्गदर्शक सिद्ध्द होती है । धर्म एवं जाति की समस्याएँ, सांप्रदायिकता, आर्थिक विषमता, विश्वबंधुत्व ही भावना, सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याएँ हर युग में अपना प्रभाव छोडते है । उन समस्याओं का मूल बिंदू तथा उनके समाधान में निश्चित तौर पर समानता होती है । अतीत में उपस्थित हुई समस्याओं के समाधान वर्तमान युग में भी लागू पडते है । इस अर्थ में हर युग का साहित्य प्रासंगिकता की कसौटी पर खरा उतरता है ।

अक्सर हम देखते हैं कि साहित्य के तत्वों की रक्षा करने में कई साहित्यकार असफल सिद्ध होते है । जो साहित्यकार समाज एवं देश के प्रति अपने उत्तरदायित्व को भूल जाता है उसका साहित्य मात्र मनोरंजनकारी बन जाता है जिसमें प्रासंगिकता खोजने के बाद हमारे हात में सिर्फ निराशा ही आती है । राष्ट्रीय संस्कृति एवं सभ्यता तथा मानवी मूल्यों में अनास्था रखनेवाले इस प्रकार के साहित्यकारों में स्थूलवादी दृष्टि के कारण क्षणिकता होती है । किंतु जो साहित्यकार अपने युगीन परिवेश, सामाजिक एवं राश्ट्रीय पहलुओं के साथ जुडा हुआ होता है उसका साहित्य हमेशा जीवंत रहता है । नाटककरा सेठ गोविंददास, को इसमें सबसे अधिक सफलता प्राप्त हुई है । '' इस संबंध जो बात सब मे महत्वपूर्ण है वह यह है कि उन्होंने भारतीय समाज के विकासकारक तथा –हासकारक तत्वों को अच्छी तरह पहचाना और जब कि अन्य नाटयकार प्रायः कृत्रिम भूख उत्पन्न करने की चेष्टा करते रहे, उन्होंने प्रकृत भूख के शमन की ओर ध्यान दिया, मर्मस्थलों पर चोट की, वास्तविक दुर्बलताओं के प्रतकी खडे किये, शक्ति के सरल और सरस स्त्रोतों को प्रवाहित किया । सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के लिए

Title : *सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय – भावना की प्रासंगिकता*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *रशिद नजरुद्दीन तहसिलदार* **yr:2013 vol:2 iss:10**

पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक क्षेत्रों से विषयों का चयन कर समस्याओं को अभिव्यक्ति दी है । वह समस्याएँ एवं परिस्थितीयॉ आज भी बरकरार है ।''

सेठ गोविंददास के नाटकों में विविधता पायी जाती है । कोई भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावना से नीहित पहलु उनके नाटकों से छुटा नही है । उनके ' सेवापथ ' नाटक में सेवा धन से तथा राजनीतिक अधिकारों से श्रेष्ठ है इस बात को व्यक्त किया है । अंत में नाटककार ने सेवा के अंतिम साधन– शरीर से देश और समाज की निस्वार्थ सेवा को ही उत्कृष्टता प्रदान की है । ' विकास ' नाटक में सृष्टि विकास के पथ पर निरंतर सामूहिक रुप से उन्नति कर रही है इसका मार्मिक चित्रण किया है । विश्वबंधुता की भावना को इसमें वाणी मिली है जो आज की आवश्यकता है । ' प्रकाश ' नाटक में तत्कालीन उच्च मध्यम श्रेणी के ढोंगी, स्वार्थी और पतित भारतीय समाज के कार्य व्यापारों की यथार्थ, प्रभावपूर्ण झॉकी स्वाभाविकता के साथ चित्रित हुई है । ' सिद्धांत – स्वातंत्र ' में सिद्धांतो के स्वातंत्र्य की दुहाई देनेवालों और प्रेम को आधार मानने वालों में कितना अंतर होता है इसे प्रदर्शित किया है । 'दलित कुसुम' नाटक में हिंदु बाल–विधवा तथा विधवा जीवन की राष्ट्रीय विडंबना का बडा प्रभावपूर्ण चित्रण हुआ है । 'त्याग या ग्रहण' गांधीवादी के त्याग और साम्यवाद के सिद्धांत का तुलनात्मक अध्ययन करनेवाला प्रभावपूर्ण नाटक है । इस नाटक के अंत में त्याग की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है । 'पाकिस्तान' नाटक में भारत पाकिस्तान विभाजन तथा हिंदू मुस्लिम सांप्रदायिक विद्वेश को अभिव्यक्ति देकर इस वर्तमान समस्या के समाधान हेतु कई तथ्य मिलते है । 'दुःख क्यों ? ' नाटक जनसेवा का ढोंग रचेनवाले अवसरवादी राजनेता का चित्रण करनेवाला प्रसिध्द नाटक है । इस नाटक के माध्यम से वर्तमान राजनिती का वास्तव रुप हमारे सम्मूख आता है । ' बडा पापी कौन ?' नाटक भी आज के राजनेताओं की पोल खोलता है ।

' हिंसा या अहिंसा ' में पूॅजीपतियों और मजदूरों के संघर्ष को मिटाने के लिए ग्रहण किए गए हिंसा के मार्ग को घातक दिखाकर अहिंसा के मार्ग की श्रेश्ठता प्रतिपादित कर गांधीवादी की प्रासंगिकता को दयोतीत किया है । ' विश्वप्रेम ' मे प्रेम, लालसा एवं व्यक्तिप्रेम तथा विश्वप्रेम का अंतर दिखाकर मानव मात्र के कल्याण के लिए सेवा और सर्वस्व त्याग के महत्व को दिखाया गया है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि सेठ गोविंददास के नाटकों के विषय प्रासंगिक रहे है । पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक सभी प्रकार के नाटकों के विषय वर्तमान युग के साथ संपृक्त हैं । स्वतंत्रता के बाद हर देशवासी नवनिर्माण की भावना मे प्रेरित हो उठा था । इस भावना को सेठ गोविंददास ने ' शशिगुप्त ' ऐतिहासिक नाटक से अभिव्यक्ति दी है । शशिगुप्त देशभक्त है । राष्ट्र के नवनिर्माण से प्रेरित शशिगुप्त वीरभद्र से कहता है '' ..... निर्माण की भावना के इस स्त्रोत के कारण न पल मात्र को मुझे थकावट आती है और क्षण मात्र को मेरा उत्साह भंग होत है । '' कहना सही होगा कि ऐतिहासिक पात्र शशिगुप्त से नाटककार ने स्वातत्र्योत्तर कालीन तथा वर्तमान युगीन राष्ट्र के नवनिर्माण की बात को दर्शाया है । राष्ट्र के संघटन, सशक्त सत्ता की स्थापना, बाहय आक्रमणों से सुरक्षा आदि बातें जिस तरह से इतिहास काल में आवश्यक थीं, उसकी आवश्यकता वर्तमान युग में भी बरकरार है । स्पष्ट है कि सेठ गोविंददास के नाटक प्रासंगिकता के सवाल पर खरे उतरते हैं । उनकी राष्ट्रीय भावना से प्रेरित नाटकों की कथावस्तु भले ही इतिहास या पौराणिक वातावरण से लीया गयी हो किंतु उसमें अभिव्यक्त हुए तथ्य वर्तमान युग में भी प्रभाव रखते हैं । समस्याओं का स्वरुप भले ही बदल गया हो किंतु समस्याएँ वही है । इन समस्याओं के समाधान के समाधान के प्रति नाटककार की दूरदृष्टि अभिव्यक्त हुई है । भविष्य के संकेतो की ओर ध्यान देकर उन्होंने अपने नाटकों का सृजन किया है । अतः सेठ गोविंददास के नाटक प्रासंगिक है ।

जति – धर्म व्यवस्था और सेठ गोविंददास के विचारों की प्रासंगिकता :

सदियोंसे भारतीय समाजव्यवस्था में जाति एवं धर्म व्यवस्था का विकृत स्वरुप दिखाई देता है । धर्म के आधारपर उच्च और नीच इस तरह का विभाजन होकर जाति व्यवस्था अस्तित्व में आयी । जाति एवं धर्म व्यवस्था के बंधन इतने कडे होते गए कि निम्नवर्गियों को गुलामों की तरह जीवन यापन करना पडा । स्वतंत्रता आंदोलन के समय जाति एवं धर्म–व्यवस्था की रुढिवादिता के विरुध्द समाज सुधारकों का एक महत्वपूर्ण अभियान चला । '' इस काल में यह तो नहीं कहा जा सकता कि जातिव्यवस्था का चढता रंग एकदम धुल गया था, किन्तु एक दृष्टि में ऐस लगता है कि राजनीतिक तथा आर्थिक आंदोलन में जब मध्य तथा निम्नवर्ग ने कन्धे से कन्धा मिलाया तो स्वभावतः रुढिग्रस्त बंधन कुछ ढीले होते गये । अस्पृश्यता जैसी भावना शनैः शनैः क्षीण होने लगी । गांधीजी ने सामाजिक और सांस्कृतिक पक्षों से अस्पृश्यता के प्रति विरोध प्रकट किया । डा. अम्बेदकर प्रभृति नेताओंने अछूतों के समान अधिकारों के प्रति संघर्श किये ।'' परिणाम स्वरुप इस युग में अछूतों के प्रति सहानुभूति का एक परिवर्तित दृष्टिकोण दिखाई देता है ।

सेठ गोविंददास के नाटकों में जाति एवं धर्म व्यवस्था के संबंधीमत प्रखरता के साथ उद्घाटित हुए है । उनके नाटक का नायक एक स्वर से '' समाज की अनुचित मर्यादा को तोडना ही धर्म है ।'' कहते हुए दिखाई देता है । ' सिंहलद्विप' नाटक का नायक विजय बौद्ध विचारों से प्रभावित होने के कारण वर्णहीन समाज के निर्माण का इच्छुक है, जिसके लिए वह अपने प्रतिद्वंद्वियों से संघर्श करता है । वह यह भी स्वीकार करता है कि '' आर्यो के धर्म और संस्कृति का मूलाधार है वर्ण–व्यवस्था । बुद्ध ने वर्ण –व्यवस्था पर कुठाराघात किया । '' विजय अस्पृश्यता मानना सबसे बडा अधर्म मानता है। भगवान बुद्ध के विचारों से प्रेरित होकर वह वर्ण व्यवस्था का नाश करने का संकल्प करता है । कुटिल शासनकर्ता उनके दबाव के कारण अपने पिता (राजा) द्वारा निश्कसित होने पर वह अपने सहयोगियोंके साथ ऐसी जगह जाना चाहता है '' जहॉ वर्ण–भेद, जाति–भेद नही होंगे और उसका नाम सिंहलद्विप रखा जायेगा जस पर वह ऐसा समाज वण–रहित, जाति –रहित होगा और उस समाज में रहनेवाले हर व्यक्ति को नागरिकता के पूर्ण अधिकार होंगे ।'' प्रस्तुत उद्धरण से नाटककार वर्तमान युग की जाति एवं धर्म व्यवस्था को नश्ट करने की धारणा व्यक्त करते हैं । रुढिग्रस्त समाज से वैचारिक और क्रांतिकारी संघर्श करनेवाले पात्र वर्तमान युग के नवयुवकों में चेतना भरने का कार्य करते है ।

प्रगति के साथ–साथ मनुष्य में सामाजिक एवं मानसिक परिवर्तन भी हुआा । जाति एवं धर्म की विकृत प्रवृतियॉ कम हो रही है । यह इस बात का संकेत है कि हम प्रगति के मार्ग पर अग्रेसर हो रहे है । '' हम यह तो दावा नहीं कर सकते कि भारत से ये रुढियॉ पूर्णतः समाप्त हो चुकी हैं । लेकिन, इतना अवश्य कह सकते है कि अधिकांश भारतीय अब बौद्धिक स्तर पर काफी सचेत हो गये है । जामि, उॅच–नीच जैसे तुच्छ भेद अब हमारी दृष्टि में कम रह गये है । पर आज भी कुछ ऐसे व्यक्ति मिल जायेंगे जो मन से वही पुरातन पंथी है और उपर से समाज में वर्तमान व्यवस्था का साथ देने की दुहाई देते हैं।'' जाति एवं धर्म व्यवस्था से संबंधित कई ऐसी घटनाएॅ घटी जिसके कारण समाज में आक्रोश की भावना थी । सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से उन्हें वाणी देकर उसके विकृत स्वरुप को समाज के सामने रखा । उन सारे प्रसंग और घटनाओं को नाटकों के पात्रों ने जिवंत रुप दिया है ।

निष्कर्षतः कहना होगा कि सेठ गोविंददास के नाटकों में राष्ट्रीय भावना के सबसे बडे अवरोध जाति एवं धर्म व्यवस्था का प्रखरता के साथ विरोध हुआ ह। । सदियों से चली आ रही इन रुढियों में जकडे अस्पृश्यों का विकास नही हुआ । हमेशा ये मुख्य प्रवाह से वंचित रहे अतः इस वर्ग में आक्रोश की भावना पनपना स्वाभाविक है । सेठ गोविंददास के पात्र उस आक्रोश को मूर्त रुप देते है । उन्होंने वर्तमान समाज में वैचारिक एवं क्रांति के माध्यम से संघर्श कडा किया है । वह इन सारी रुढियों को तोडकर समाज में एकता स्थापित करना चाहते हैं । वर्ण एवं जन्म के आधार पर नहीं, बल्कि कर्म के आधार पर वे मनुश्य की श्रेश्ठता को नापने के पक्ष में है । जाति एवं वर्ण व्यवस्था की प्रवृत्ति प्राचीन काल से चली आ रही है जिसके बंधन जरुर ढिले पढ गए हैं । किंतु यह कहा नहीं जा सकता है कि

DSpace™

वह पूरी तरह से खत्म हो गयी है । वर्तमान युग में उसके कुछ अंश मिलते हैं जिसे मिटाने की पहल सेठ गोविंददास के नाटकों के पात्र करते हैं । वर्तमान समाजव्यवस्था में एकता की भावना स्थापित करने हेतु नाटककार के प्रयास निश्चित ही प्रशंसनीय माने जाएँगे ।

सांप्रदायिकता संबंधी विचारों की प्रासंगिकता :

अपने धर्म को श्रेश्ठ मानाने की परंपरा प्राचीन काल से भारतीय समाज व्यवस्था में विद्यमान है । हिंदू–मुस्लिम, सीख–इसाई आदि धर्म के यह स्तर अपने धर्म को ही श्रेश्ठ मानते है । अपने धर्म के प्रति कट्टरता तथा दुसरों के धर्म के प्रति अनुदारता का फायदा कुछ स्वार्थी प्रवृत्तियॉ अपने स्वार्थ सिद्धी हेतु लेती है । अंग्रेजो से यह परंपरा शुरु है । उन्होंने ' फोडो और राज्य करो ' नीति का अवलंब कर हमेशा हिंदू–मुस्लिमों को आपस में लढवाकर राज्य किया । यही नीति वर्तमान राजनीति में भी पायी जाती है । स्वार्थी राजनेता चुनाव जितने हेतु हिंदू–मुस्लिमों को आपस में लडवाते है और दोनो धर्मियों की सहानुभुति पाकर चुनाव जीतता है । किंतु हिंदू और मुस्लिमों में एक–दुसरे के प्रति विद्वेश एसवं क्रोध की भावना कायम रहती है । अनेक सामाजिक आंदोलनों में सांप्रदायिक एकता हेतु महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

सेठ गोविंददास के नाटक राश्ट्रीय भावना से युक्त हैं । राश्ट्रीय एकता बनाए रखने हेतु सांप्रदायिक एकता की आवश्यकता को उन्होंने महसुस किया है । सेठ गोविंददास कृत ' रहीम ' नाटक में तुलसीदास रहीम को सम्राट अकबर की धार्मिक नीति के संबंध में बतला रहे हैं '' अपने–अपने धर्म के अनुसरण की सबको पूर्ण स्वतंत्रता है । मंदिर और मस्जिद एक से माने जाते है ।'' स्पश्ट है कि इतिहास काल में सांप्रदायिक एकता बनाए रखने हेतु प्रयास हुए हैं । उसी धार्मिक उदारता की आवश्यकता वर्तमान युग में है । धर्म एक ही है किंतु उसके रुप अलग–अलग हैं । सेठ जी ने सभी धर्मोंकी समानता पर बल देते हुए धार्मिक स्वतंत्रता का समर्थन किया है । उनके नाटक ' महात्मा गांधी ' में गांधीजी धर्म की व्याख्या प्रार्थना सभा में इस प्रकार करते है – '' सब धर्म दर असल एक ही हैं । सवाल तब उठ सकता है कि फिर वे अलग–अलग धर्म क्यों ?जिस तरह आत्मा एक ही है पर शरीर अलग–अलग । उसी तरह हम सब शरीरों को एक नहीं कर सकते पर सब शरीरों को एक नहीं कर सकते पर सब शरीरों में एक आत्मा को देख सकते हैं । वही बात सब धर्मों के संबंध में भी है ।'' नाटककार ने धर्म के प्रति भावना को उदारवादी दृश्टि से देखकर महात्मा गांधीजी के माध्यम से दार्शनिक सिद्धांत की प्रतिश्ठापना की है । महात्मा गांधीजी का यह आदर्शवादी दर्शन पक्ष वर्तमान में ही नही सदियों तक उपयोग में आएगा । उन्होंने अपने नाटक ' पाकिस्तान ' में सांप्रदायिकता को समूल नश्ट कर व्यक्ति की मानवीयता जागृत करने का प्रयास किया है ।

सांप्रदायिक संघर्शों की अभिव्यक्ति हर युग के साहित्य में हुई है । सांप्रदायिकता की संकल्पना काफी व्यापक है जिसका विश्लेशण करते हुए डॉ. सिताराम झा लिखते है – ''सामान्यतया एक सम्पद्राय में दीक्षित लोग दूसरे सम्प्रदायवालों को नीची दृश्टि से देखते हैं । अवसर–विशेश पर वे अनावश्यक दंभ का प्रदर्शन भी करते हैं । परिणामस्वरुप परस्पर द्वेश की स्थिती उत्पन्न होती रहती है । यही सधन होने पर दंगो का रुप भी धारण कर लेती है । इसके अतिरिक्त अधिक शक्तिशाली और सम्पन्न सम्प्रदाय बलपूर्वक अन्य सम्प्रदायों को भी अपनी परिधि में परिवेश्ठित कर लेना चाहता है । विशेशतः इस्माल और इसाई शासक ऐसा करते अधिक देखे गये हैं । हिन्दी नाटकों में विभिन्न सम्प्रदायों के बीच होनेवाले संघर्शों का चित्रण कर अब धर्मों की एकता दिखाई गई है ।'' सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से सांप्रदायिक विद्वेश के दुश्परिणामों को घटनाओं एवं प्रसंगो के सहाने चित्रित कर सांप्रदायिक एकता की आवश्यकता की हिमायत की है ।

सेठ गोविंदरास के नाटकों के नायकों में समन्वय की विराट चेश्टा दिखाई देती है । उनके नाटकों में समन्वय वादी भावना सर्वत्र व्याप्त है । ' पाकिस्तान ' नाटक में सेठ जी ने हिंदू–मुस्लिम एकता का आदर्श प्रस्तुत किया है । अनेक प्रयासों के बाद भी देश के दो टुकडे हो जाते है , किंतु नाटक का नायक अपनी समन्वयात्मक भावना को बनाए रखना चाहता है । '' मुझे हिंदु मुसलमानों में अभी भी कोई भेद नजर नहीं आता । हिंदु मेरे कौम के है और मुसलमान किसी गैर कौम के, यह मुझे महसुस नही होता ।'' प्रस्तुत नाटक के नायक में उभर आयी समन्वयवादी चेतना निश्चित ही वर्तमान युग में आदर्श स्थापित करने योग्य है । आज के नवयुवकों में इसी समन्वयवादी प्रवृत्तियों की आवश्यकता नाटककार ने महसुस की है । इस नाटक के जहॉनारा और शांतिप्रिय का परस्पर स्नेह हिंदु मुसलमानों के पारम्परिक बंधुत्व का प्रतिक है । पीरबख्श जैसे पात्र का चरित्र व्यक्तिगत स्वार्थ पर देश के कल्याण का बलिदान देनेवालें का सजीव उदाहरण है । महकुज खॉ सांप्रदायिक झगडों के विरोध में चुनौति खिडी करते हुए अपने विचारों से आदर्श स्थापित करता है । वह कहता है '' देखिए, यहॉ सब खेती करने वाले हैं , या मजदूरी । हिन्दू भी वही करते है और मुसलमान भी वही रोटी का सवाल सब के लिए एक–सा है और वही इस दुनिया में एक दूसरे को एक सूत्र से बॉधता है । मजहब की दूसरी बात है, वह इस संसार की नहीं, दूसरी दुनिया की चीज है ।'' मजहब के नाम पर एक–दूसरे का खून बहाने की यह प्रवृत्ति निश्चितही निंदनीय है । क्योंकि धर्म, जाति, वर्ण आदि बाते मनुश्य निर्मित है और प्रकृति ने सभी मनुश्यों को एक समान बनाया है ।

' शेरशाह ' नाटक में विदेशी और स्वदेशी मुसलमानों का पारम्परिक संघर्श है । शेरशाह हिंदुस्तान को अपना मुल्क मानता है । इस मुल्क पर आक्रमण करनेवाले मुगलों को अपना दुश्मन समझता है । वह कहता है '' मुगल चाहे मुसलमान हो, लेकिन उन्हें मैं इस मुल्क के लिए लुटेरा समजता हूँ । मैं चाहता हूँ इस मुल्क के हिंदू मुसलमान दोनों मिलकर इस बाहरी कौम का मुकाबला करें ।'' प्रस्तुत नाटक के माध्यम से नाटककार ने धार्मिक स्वार्थांधता से राश्ट्रीय सुरक्षा को महत्वपूर्ण माना है । राश्ट्र में जब असमानता का वातावरण होता है तब विदेशी आक्रमणकारियों के लिए यह अच्छा अवसर होता है । अतः सांप्रदायिक एकता को बनाए रखकर देश की सुरक्षा को बरकरार रखने का सन्देश इस नाटक से व्यक्त हुआ हैं । अंत में कहना होगा कि सांप्रदायिक एकता की दृश्टि से सेठ गोविंददास के नाटक प्रासंगिकता के स्तर पर सफल सिद्ध हुए दिखाई देते हैं । राश्ट्रीय सुरक्षा, राश्ट्रीय विकास एवं मानवतो के विकास को ध्यान में रखकर उन्होंने सांप्रदायिक एकता के महत्व को अधोरेखित किया है । वर्तमान युग में सांप्रदायिक दंगे होते हैं जिनसे निजात पाने हेतु उनके नाटकों के पात्र हमें निश्चित रुप से सहाय्यता करने की क्षमता रखते हैं ।

वर्तमान राजनीति और सेठ गोविंददास के विचारों की प्रासंगिकता :

देश की शासन व्यवस्था को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए विशेश नीतियों की आवश्यकता होती है । वह नीतियॉ ही राजनीति है । प्रत्येक देश की राजनीति उस देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक स्थिती का दर्पण होती है । भारतीय राजनीति में स्वतंत्रता के बाद नया मोड आया । अपेक्षा यह थी कि राजनीति आम आदमी के हाथ में आ जाएगी किंतु जनता का मोहभंग हुआ, राजसत्ता कुछ ही व्यक्तियों के हाथ में आबद्ध हो गयी । '' भारतीय राजनीति सत्ता का पर्याय बन गयी देश की सारी आर्थिक शक्ति, राजनीतिक सत्ता और बौद्धिक समझ मुट्ठीभर शासकवर्ग में केंद्रित हो गयी । आर्थिक विशमता का अनुपात बढ गया है । चुनाव के माध्यम से गरीबों का शोशण किया जाना राजनीतिक चरित्र हिनता का प्रमाण है ।'' राजनीति में जिस आदर्शवाद की आवश्यकता है उसकी पूर्ति हेतु साहित्यकारों ने विशिश्ट आंदोलन चलाया जिसमें सेठ गोविंददास अग्रणी है ।

सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद भारतीय राजनीति में प्रवेश की अपप्रवृत्तियॉ, उसके दुश्परिणामों, वर्तमान दुशित राजनीति तथा उन्हें सुधारने की पहल की है । देश को आजादी मिलने के बाद कॉग्रेस सत्ता में आयी । कॉग्रेस के स्वार्थी और भ्रश्ट नेताओं ने पद हासिल कर लेने के बाद जनता के विकास की सारी अपेक्षाऍं भग्न हुई । '' जनता के कल्याण के लिए जिन क्रान्तिकारी योजनाओं की परिकल्पना की गयी थी, उनको कार्यान्वित करने का कोई उत्साह कांग्रेसियों में शासक बनने के बाद नही रह गया । प्रजा के कल्याण के लिए कुछ करने के लिए यदि आगे बढते तो धन के साधन की अपेक्षा होती थी और फलस्वरुप नए कर लगाने की विवशता आ जाती

। नेताओं को लोकप्रिय भी बने ही रहना था । इसलिए नये कर लगाते समय वे हिचकते थे । शासन के बडे–बडे खर्चो को घटाने ही हिम्मत भी उनमें नही थी ।'' प्रस्तुत उद्धरण से कॉग्रेसियों की मानसिकता परिलक्षित होती है जो आज भी विद्यमान है । आज भी राजनीति में धनवान लोगों का अधिपत्य है जिन्हे गरीबों की ओर ध्यान देने के लिए समय नहीं है ।

' सेवापथ ' नाटक में राजनेता, मंत्री तथा सरकार अपने अधिकारों की रक्षा का ध्यान रखकर ही किस तरह से काम बनाते हैं सेठजी ने इसका चित्रण किया है । इस नाटक में शक्तिपाल सिंह मंत्री है जो पूँजीपतियों के अधिकार की रक्षा करता है किंतु बात करता है समाजवाद की '' कौन्सिल में दो बिल पेश किये गए थे, एक तो किसानों की दिशा सुधारने के लिए और दूसरा कारखानों में काम करनेवाले बच्चों के काम करने के घंटे कम करने के लिए । परंतु वे दोनों बिल पूँजीपतियों ने अस्वीकृत करवा दिए क्योंकि इससे उनको हानि पहूँचती थी ।'' इस प्रकार इस नाटक से स्पष्ट होत है कि पूँजीपति लोग ही सरकार को चलाते हैं । आज सारे देश में ऐसे ही लोगों का प्रभाव है जो राजनीति के माध्यम से धन कमाते हैं । जिनका गरीबों के दुःखों से कोई लेना देना नहीं फिर भी वे उनके रक्षक बन बैठे हैं ।

राजनेताओं के चरित्र को लेकर भी काफी चर्चाऍ राजनीतिक क्षेत्र में देखी जाती हैं । जिस आदर्शवादी राजनीति की कल्पना महात्मा गांधीजी ने की थी ठीक उसके उल्टे आज की राजनीति तथा राजनेताओं का चरित्र सामने आता है । ' संतोष कहॉ ? ' नाटक में राजनीति की कठोर आलोचना हुई है । '' इस समय देश की राजनीति में जिन्हे महानता एवं विशेषता प्राप्त है यह, उनके किसी महान या विशिष्ठ गुण के कारण नही है वरन् दुसरों की कमजोरियों और दुर्गुणों के कारण है ।'' प्रस्तुत उद्धरण से स्पष्ट होता है कि राजनीति में सिर्फ बुराई शेश रही है । आम आदमी अगर उससे अच्छाई की अपेक्षा रखता है तो उसके मोहभंग होने की संभावना ही ज्यादा है । सेठ गोविंददास के नाटकों के माध्यम से यह बात सशक्तता के साथ सामने आती है ।

' प्रकाश ' नाटक में राजा अजयसिंह गवर्नर को पार्टी देते हैं तब प्रकाश उसमें विध्वंस मचाता है । इस नाटक के माध्यम से दिखाया गया है कि '' मिट्टी के बर्तनी की दूकान में घूसकर एक सॉड ने बर्तनों को तो–फोड डाला, प्रकाश ने ' राजा अजसिंह ' की स्वार्थसिद्धी की दूकान में प्रवेश करके इसी प्रकार सर्वनाश का दृश्य उपस्थित कर दिया ।'' अंत में कहना होगा कि सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित हुई राजनीति वर्तमान के बिलकुल करीब की लगती है । राजनीति के माध्यम से देश के विकास एवं उन्नति के चित्र बनाए जाते है । किंतु राजनीति ही अगर दोशपूर्ण है तो राष्ट्रीय विकास के सामने प्रश्नचिन्ह खडे होते हैं । सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से वर्तमान राजनीति का चित्र उपस्थित कर उसके दोषों पर कठोरतापूर्वक प्रहार किए है । उनके नाटकों में चित्रित हुए राजनीतिक विचार वर्तमान एवं भविष्य की राजनीति में सुधार लाने की दृष्टि से काफी लाभदायक हैं ।

देशभक्ति की भावना और उसकी प्रासंगिकता :

सदियों की दासता के बाद भारत में स्वाधीनता आंदोलन शुरु हुआ । क्रांती की भावना से प्रेरित होकर हर कोई देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने के लिए तैयार हुआ । राष्ट्र के प्रति समर्पित भाव रखकर हर कोई देश को स्वतंत्र करने की जद्दोजहद करने लगा । हर देशवासी त्याग एवं बलिदान के माध्यम से राष्ट्र के सामने नए आदर्श प्रस्तुत करना चाहता था । देश आजाद हुआ । आजाद देश में संविधान के अनुसार शासन कार्य सुरु हुआ । आज हर कोई खुद को आजाद देश का नागरिक समझाता है । किंतु वर्तमान में भी देशभक्ति का वही प्रखर भाव हममें विद्यमान होने की आवश्यकता है जो स्वाधीनता आंदोलन के समय था । वर्तमान युग की राष्ट्रीय समस्याऍ भलेही अलग हो, इन्हें मिटाने के लिए हर देशवासी के मन में देशभक्ति की आवश्यकता है ।

सेठ गोविंददास के अधिकांश नाटकों के पात्र देशभक्ति की भावना से युक्त हैं । हर पात्र अपने व्यक्तिगत सुख एवं स्वार्थ से परे जाकर मानव एवं राष्ट्र के हित की चर्चा करते हुए दिखाई देता है । ' हर्ष ' नाटक का नायक इन्हीं भावों से प्रेरित होकार कहता है '' मै हपने किसी दैहिक सुख अथवा स्वार्थ के लिए किसी से विश्वासधात करुँ तो पातकी हूँ । किसी महान कार्य के लिए किन उपायों का अवलम्ब किया गया, यह बात गौण है, कार्य की सिद्धी मुख्य है ।'' इन नाटकों में चित्रित हुए पात्रों में देशभक्ति की भावना प्रचुरता के साथ मिलती है । देशभक्ति का आदर्श रुप सेठ गोविंददास के नाटकों में सर्वत्र दिखाई देता है ।

' शशिगुप्त ' नाटक में देशभक्ति का व्यापक रुप प्रस्तुत हुआ है । चाणक्य शशिगुप्त के मन में विदेशी आक्रमण कारियों के विरुध्द मन में आक्रोश भरने का कार्य करता है । शशिगुप्त अपनी मातृभूमि के लिए अपने प्राण देकर भी रक्षा करना चाहता है । शशिगुप्त कहता है । '' विदेशी इस पवित्र भूमि को पददजित करें और हम चुपचाप देखते रहें । हमारी स्वतंत्रता का अपहरण हो और हम हिंले–डुलें तक नही, यह तो कल्पना के बाहर की स्थिती है ।'' शशिगुप्त के इस कथन में मातृभूमि के प्रति प्रेम तथा विदेशी आक्रमणकारियों के प्रति आक्रोश एवं विद्रोह के मूल में देशभक्ति का भाव है । सेठ गोविंददास अपने पात्रों के माध्यम से सारे देशवासियों में देशभक्ति की चेतना भरने में सफल सिद्ध हुए है । शशिगुप्त की तरह चाणक्य भी बडा देशभक्त है जिन्होंने अनेको को देशभक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है । शकटार राक्षस को स्वामी भक्ति के स्थानपर देशभक्ति के मार्गपर चलने की प्रेरणा देते हुए कहता है '' समष्टि के सम्मुख व्यक्ति का कोई स्थान नही, चाहे वह व्यक्ति कोई भी क्यों न हो । देश–भक्ति के सम्मुख व्यक्ति–भक्ति का कोई महत्व नही, चाहे वह व्यक्ति कोई भी क्यों न हो ।'' देश की रक्षा और देश के उत्कर्ष के लिए ऐतिहासिक एवं पौराणिक काल के पात्रों में जिस तरह की देशभक्ति दिखाई देती है उसी तरह के देशभक्ति के भाव वर्तमान युग के देशवासियों में होने की आवश्यकता की ओर सेठ गोविंददास ने बार–बार संकेत दिया है । देशभक्ति के आदर्श प्रस्तुत कर उन्होंने राष्ट्र एवं राष्ट्रीय भावना को व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है ।

सिद्धांत–स्वातंत्र्य ' नाटक में हिंसा और अहिंसा, आतंकवाद और सविनय अवज्ञा के द्वंद्व को प्रस्तुत करके निष्कर्ष रुप में यह बताया है कि अहिंसा की विजय होती है तो हिंसा की पराजय और जहॉ आतंकवाद असफल होता है वहॉ गांधीवाद सफल । इस नाटक में जिलाधीश विश्वेश्वर दयाल अपने पोते मनोहर की पुलिस के गोली का शिकार होने के बाद देशप्रेम की ओर आकृष्ट होने की मानसिकता को चित्रित किया है । मनोहर ने उन्हें बताया था कि देशप्रेम क्या होता है । मनोहर की मृत्यू से जिलाधीश विश्वेश्वर दयाल की भी ऑखे खुल जाती है और वह अनुभव करता है कि '' अपने देशवासियों, न्या–परायण देशवासियों और फिर मनुष्यता की दृष्टि से निःशस्त्र मनुष्यों, स्त्रियों और बच्चों को जेलों में ठूँस कर, लाठियॉ मार कर और गोली का निशाना बना कर पन्द्रह सौ रुपया माहवार पाने की अपेक्षा पन्द्रह रुपये महीने पर गुजर कर लेना कहीं अच्छा है ।'' आज सरकारी अधिकारीयों ने जिस तरह की धॉधलियॉ मयाची है उनके लिए प्रस्तुत उद्धरण एक सीख है कि देशभक्ति से श्रेश्ठ इस दुनिया में कुछ भी नहीं है । अपनी मातृभूमी के प्रति श्रद्धा, आस्था, निष्ठा एवं प्रेम का भाव रखनेवाला मनुश्य ही समाज के सामने कोई आदर्श प्रस्तुत कर सकता है । वर्तमान युग में देशभक्ति की भावना क्षीण होती जा रही है इस अवस्था में नाटककार सेठ गोविंददास के नाटक हमारे सामने देशभक्ति का जो आदर्श प्रस्तुत करते हैं वह युग की मॉग है जिसकी ओर प्रस्तुत नाटक संकेत करते हैं ।

विश्वबंधुता संबंधी विचारों की प्रासंगिकता :

भारतीय सदैव अपने धर्म और संस्कृति के साथ अन्य धर्म और संस्कृति के प्रति उदार रहे हैं । देश को आजादी मिलने के बाद भारतीयों ने संकुचित दृष्टिकोण से उपर उठकर विश्व तक के विशाल दृष्टिकोण से सोचना प्रारंभ किया । महात्मा गांधीजी ने विश्वबंधुता का

संदेश सुनाया है । स्वामी दयानंद सरस्वती, राजा राममोहन राय तथा विवेकानंद जैसे महापुरुषों ने राष्ट्रवाद को विश्वमानवतावाद की ओर अग्रेसर किया है । जाति, संप्रदाय और राष्ट्रीय भावना को विश्वमानवता तक ले जाने की उदार भावनाओं का जतन भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है । राष्ट्रीयता को संकुचित धर्म मानकर वैश्विक एकता का समर्थन भारतीय साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रमुख रुप से किया है। विश्व में राष्ट्रीयता की जो संकुचित मनोवृत्तियॉ मनप रही हैं उससे सारे विश्व को उभारना नही तो सारे विश्व को एक क्रांति का सामना करना पडेगा । जब कोई राष्ट्र विश्व के अन्य सबल और निर्बल राष्ट्रों की उपेक्षा कर संकुचित राष्ट्रीयता के घेरे में रहता है तब उसका विकास नहीं होता । जब तक वह कूपमंडूक वृत्ति छोकर विश्व की ओर नहीं देखेगा तब तक राष्ट्रीय विकास नहीं होगा इसे सेठ जी भलिभॉति जानते थे ।

सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित हुए पात्र प्रचुर मात्रा में विश्वबंधुता की वकालत करते हुए दिखाई देते हैं । ' वसुदैव कुटूम्बकम ' की धारणा को उन्होंने अपने व्यवहार के माध्यम से चरितार्थ बनाया है । इस संबंध में स्वयः सेठ जी ने लिखा है कि ''.... संसार अब तक किये गये समस्त अनुसंधानों में मेरी दृष्टि में देश काल और पात्र के परे सबसे बडा अनुसंधान वेदांत के खाल्विर ब्रह्म महाकाव्य में भरा हुआ है । इसका अनुभव करना ही मैं मनुष्य का सबसे बडा ज्ञान मानता है । जब तक यह पंचभूतमय शरीर है तब तक मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म किए बना नहीं रह सकता । इस अनुभव के पश्चात ही मनुष्य वैसे कर्म करेगा जो सबके लिए हितकारी हो, क्योंकि समस्त सृष्टि में एकता का अनुभव होने के प्श्चात् अपना–पराया यह भेदभाव उसके लिए रह ही नहीं जाएगा ।'' उनके अनुसार मनुष्य जीवन दार्शनिक सिद्धातों से भरा हुआ है । मनुष्य जीवन तथा उसकी विचार प्रकिया जैसे–जैसे विकसित हो जाती है वह व्यापक रुप से सोचने लगता है । संकुचित मनोवृत्ति से बाहर आकर जब मनुष्य सोचना है तब विश्वमानवता के सपने साकार होते है ।

इस भौतिक युग में विज्ञान ने मनुष्य को उन्नति के शिखर पर तो पहूॅचा दिया किंतु उसके हाथ में विनाश के ऐसे अस्त्र भी दिए हैं जिसके कारण मानवता खतरे में आयी है । सेठ गोविंददास के 'विकास ' नाटक में पृथ्वी आकाश की इसी विनाश की ओर संकेत कर रही है – ''शब्दों में सभी एकता, विश्व–प्रेम और विश्व–बंधुत्व की दुहाई देते है । विना एकता का अनुभव और अनुरुप कर्म किए जो आधिभौतिक उन्नति को रही है । उससे कितना नाश हो चुका है और हो रहा है, यह मैंने तुम्हें आज के ही कुछ दृश्य दिखाकर सिद्ध कर दिया है । भविष्य में इस आधिभौतिक उन्नति से और भी अधिक नाश की सम्भावना है ।'' मनुष्य से यही आशा की जाती है कि वह सारे विश्व को एक मानकर सारी प्रतीमाओं को तोडकर विश्वमानवता का उदात्त परिचय दें । दुर्भाग्यवश आज की विशम परिस्थितियों में इस तरह की आशा करना कहॉ तक उचित है यह भी प्रश्न है ।

सेठ गोविंददास ने 'शशिगुप्त ' नाटक में भी इसी भावना को व्यक्त किया है । इस नाटक में चाणक्य यवनों को भारत से निकलवाकर शशिगुप्त और हेलन का विवाह कराना चाहते है । विश्वबंधुत्व की ओर संकेत कर वे हेलन से कहते हैं '' यह तो यवन सम्राट की विजय का प्रस्ताव है । इस विवाह के पश्चात तो शशिगुप्त के पितातुल्य होने के कारण सच्चे विजेता यवन सम्राट हो जाते है । और फिर ..... और फिर मैने सुना है कि यवन और भारतीय, यूनान और भारत, इन भेदभावों में आपको विश्वास ही नही । आप तो सारे मानव समाज को एक जाति, सारे विश्व को एक देश मानती है । मेरा यह प्रस्ताव तो आपके सिद्धांतो को कार्यरुप में परिणत करता है । एक जाति के निर्माण का बीज बोता है । विश्व को एक देश बनाने का प्रारम्भ करता है ।'' स्पष्ट है कि विश्वबंधुता के संकेत सेठ गोविंददास ने काफी पहले दिए हैं जिसकी जरुरत विश्व आज भी महसूस कर रहा है । वर्तमान युग में सारा विश्व जिस तरह के संकटों से गुजर रहा है इस तरह की विशम परिस्थितियों में देशों के आपसी पारस्परिक संबंध अच्छे होने की आवश्यकता की ओर सेठ गोविंददास के विचार संकेत करते हैं ।

व्यावहारिक दृष्टि से भारतीय संस्कृति नें विश्वबंधुता का नारा लगाया है । इतिहास साक्षी है कि हमारे देश ने कभी रक्त से क्रांति का पक्ष नहीं लिया बल्कि प्रेम से अनुराग व्यक्त किया है । अशोक, हर्श आदि कितने सम्राट हुए हैं वे युद्ध नहीं, प्रेम चाहते थे । उनकी कामना थी कि संपूर्ण कि विश्व बंधुत्व के पावन सूत्र में बॅधे । आज भी हमारा देश इस प्रेम की परंपरा को मानता है । आज की इस आकांक्षा को सेठ गोविंददास ने अपने ' हर्श ' नाटकमें चीनी यात्री से बात करते हुए स्पष्ट किया है । हर्ष सारे देशों का विशुद्ध प्रेम चाहता है । उसकी बुद्ध की करुणा के प्रति श्रद्धा है । हयांग चांग से हर्ष कहता है – मैने सुना है, पुलकेशियन से पारस देश का पारस्परिक मैत्री संबंध है । चीन और आर्यावर्त का संबंध आप करा दीजिए । इस प्रकार चीन, पारस और भारत इन तीन महान देशों में यदि परस्पर मैत्री हो गई, तो जम्बू द्वीप के अन्यान्य छोटे–छोटे देशों में तो यह कार्य बहुत शीघ्र हो जायेगा और फिर संसार का गुरु जम्बूद्विप इस दिशा में भी अन्य द्विपों के पथ प्रदर्शक का कार्य करेगा ।... मेरा जीवन तथा सारे आर्यावर्त की शक्ति अब इसी शुभकार्य में लगेगी ।'' अंत में कहा जा सकता है कि सेठ गोविंददास के बहुतांश नाटकों के पात्र वैश्विक एकता में विश्वास रखते हैं । वर्तमान युग जिन विभीकाओंसे गुजर रहा है उससे विश्वबंधुता की आवश्यकता और अधिक महसुस की जा रही है । जब तक सबल देश निर्बल देशों के साथ प्रेमपूर्ण संबंध नही रखते हैं तब तक उन देशों का विकास संभव नहीं है । युद्धजन्य त्रासदियों से अगर विश्व को बचाना है तो विश्वबंधुता के अलावा और कोई चारा नही है । सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित हुई विश्वबंधुता की भावना वर्तमान युग में कितनी प्रासंगिक है इसी बात की ओर उपर्युक्त संदर्भ संकेत करते हैं । निश्चित ही सेठ गोविंददास के विश्वबंधुता संबंधी विचार प्रासंगिक हैं जो वर्तमान युग में ही नहीं बल्कि भविष्य में भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं ।

सेठ गोविंददास के गांधी विचारों की प्रासंगिकता :

महात्मा गांधीजी ने संपूर्ण विश्व के सम्मुख सत्य, अहिंसा, प्रेम, मानवता और विश्वबंधुता का संदेश दिया । वे हिंसात्मक साधनों के स्थानपर हृदयपरिवर्तन की नीति में विश्वास रखते थे । '' उनकी दृढ धारणा थी कि बलपूर्वक अस्थायी सुधार लाने की अपेक्षा मनुश्य का अंतरमन का संस्कार और परिश्कार करके फलप्राप्त करना अधिक श्रेयस्कर है ।'' गांधीजी की दृष्टि जीवन के सभी पहलुओं पर थी । संपूर्ण मानवता का कल्याण उनका लक्ष्य था । गांधीजी का मत व्यापक, उदार और संपूर्ण मानवता का पथ–प्रदर्शक रहा है । उनकी विचार धारा का प्रभाव धर्म, संस्कृति, साहित्य आदि क्षेत्रों पर भी पडा है । गांधीजी ने अपने दिव्य विचारों का सहारा लेकर शक्तिशाली विदेशी सत्ता को चुनौति दी तथा संपूर्ण विश्व को मानवता का संदेश दिया । सत्य का प्रतिपादन करते समय उन्होंने आत्मशुद्धीपर बल दिया है ।

सेठ गोविंददास गांधीजी के व्यक्तित्व और विचारधारा के समर्थक हैं । उनके जीवन और साहित्य दोनों पर गांधीवाद का पूर्ण प्रभाव देखा जा सकता है । उनके नाटक गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित है । ' विकास ' नाटक में उन्होंने गांधीजी के प्रति दृढ आस्था प्रकट करते हुए उनके उच्च आदर्शों की ओर विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है । आकाश पृथ्वी से कहता है – '' बौद्ध धर्म के समान ईसाई धर्म का कार्य समाप्त हो जाने पर उसका भी पतन हो गया, किन्तु सामूहिक रुप से सृष्टि की उन्नति न रुक जाए इसलिए तुम्हारे भारत देश में महात्मा गांधी ने जन्म लिया है । यह देखकर कि केवल धर्म प्रचार के लिए मानव समाज अपने ज्ञान के अनुसार कर्म नहीं कर सकता, केवल इतने ही से प्रेम का साम्राज्य और अहिंसा की स्थापना नहीं हो सकती, उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में यहॉ तक कि राजनीति में भी प्रेम और अहिंसा को प्रधान स्थान दिया है । इस समय जिस प्रकार का मानव संहार हो रहा है उसके लिए राजनीति उत्तरदायी है अतः महात्मा गांधी ने सबसे पहले उसी का सुधार करना आरम्भ किया है ।'' ऐसा लगता है कि सारा विश्व हिंसा से ग्रस्त हो उठा था । सारा विश्व ऐसे ही महामानव की प्रतिक्षा में था कि जो सारे विश्व को अहिंसा का मार्ग दिखाए, जो हमें गांधीजी के रुप में प्राप्त हुआ ।

' अशोक 'नाटक में अहिंसा और प्रेम द्वारा राष्ट्रीय एकता स्थापित करने का प्रयास किया है । इस नाटक में अशोक अपनी नीति में

परिवर्तन करते हुए घोषणा करता है । '' अहिंसा और प्रेम द्वारा केवल भारतीय एकता का ही प्रयास न किया जाएगा अपितु सारे जम्बू द्विप और सारे संसार को इसी अहिंसा और प्रेम के सूत्र में बॉधने का भी प्रयास होगा ।'' स्वाधीन भारत की हमेशा यही नीति रही है कि देश–विदेश में अहिंसा द्वारा ही शांति स्थापित हो सकती है । इसी के माध्यम से पारस्पारिक एकता की भावना विकसित हो सकती है । महात्मा गांधीजी ने सारे विश्व को अहिंसा का प्रबल शस्त्र दिया है । हिंसा मनुष्य में आपसी द्वेश निर्माण कर युद्धजन्य परिस्थिती का निर्माण करती है । हिंसा से कभी भी शांति नहीं मिल सकती बल्कि युद्ध की परिस्थितियॉ उत्पन्न होती है ।

सेठ गोविंददास का ' विजयबेली ' नाटक महात्मा गांधीजी के अहिंसा तत्व का समर्थन करनेवाला नाटक है । इस नाटक का नायक कुरुश में सारे विश्व को जितने की आकांक्षा है । वह धर्मयुद्ध में विश्वास रखनेवाला है । पर जब भारतपर कुरुश आक्रमण करता है तब पश्चिमोत्तर की एक मसगत नामक जंगली जाति से युद्ध करते हुए उसके हाथों से अन्याय हो जाता है तथा उस अधर्म के श्कारण उसकी संपूर्ण शक्ति मनोवैज्ञानिक कारणों से लुप्त हो जाती है । वह जोराष्टर के आश्रम में मरता है । मरते समय वह अपनी पत्नी से कहता है '' तुम ठीक कहती थी कि धर्म युद्ध के सदृश्य कोई वस्तु नहीं । हिंसा से हिंसा की उत्पत्ति होती है, शांति की नहीं । युद्ध से संसार का कल्याणकारी साम्राज्य स्थापित नहीं हो सकता । मैं यह तो मानता हूँ कि संगठन का कल्याण एक सूत्र में बॅधने पर ही निर्भर है । पर संसार का एक सूत्र में बॅधना युद्ध से संभव नही । आज हो या कल, सौ वर्ष में हो या हजार वर्ष में हो, या दस हजार वर्ष में, तुम्हारे कथा नुसार हृदय परिवर्तन होकर, मूल्य परिवर्तन होकर, अहिंसा, केवल अहिंसा द्वारा ही संसार का कल्याणकारी राज्य स्थापित हो सकता है, अन्य किसी उपाय से नहीं । सच्चा विजेता वही होगा जो संसार को प्रेम से जीतेगा , युद्ध से नहीं ।'' प्रस्तुत उद्धरण से महात्मा गांधीजी के अहिंसा एवं हृदय परिवर्तन की नीति में विश्वास किया गया है । आज की विशम परिस्थितियों में मनुष्य को हिंसा से नहीं बल्कि प्रेम से ही जीता जा सकता है । महात्मा गांधीजी के यह उदार और आदर्श विचार निश्चित ही वर्तमान पीढी के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे इसमें कोई संदेह नहीं ।

' कुलीनता ' नाटक में सेठ जी ने गांधी विचारों का आदर्श प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत नाटक में चित्रित हुए गांधी विचारों की प्रासंगिकता कालातित है । इस नाटक में चित्रित हुए यदुराय के विचार निश्चित ही प्रशंसनीय हैं । '' क्षमा में जो महत्ता है जो औदार्य है वह क्रोध और प्रतिकार में कहॉ?प्रतिहिंसा हिसा पर ही आघात कर सकती है उदारता पर नही ।'' मनुष्य में स्थित जितने भी विकार है उन विकारों पर जब तक मनुष्य विजय नहीं प्राप्त करता तब तक उसकी सफलता में अवरोध पैदा होना स्वाभाविक है । ऐसी स्थिति में हमे महात्मा गांधीजी के विचार ही मार्गदर्शक सिद्ध होते हैं । सेठ गोविंददास के अधिकांश नाटकों में गांधीवादी सिद्धांतो की अभिव्यक्ति मिलती है । सत्य, अहिंसा, मानव चेतना तथा साम्यवाद के सिद्धांतो को उन्होने अपने नाटकों में विशेष रुप से अधोरेखित किया है । 'विकास ' नाटक में गांधीनीति तथा सत्याग्रह की व्याख्या की है । वह लिखते हैं '' गांधी ने अन्याय पर विजय प्राप्त करने के लिये एक नवीन मार्ग ' सत्याग्रह ' का अनुसंधान किया है । इसमें पाशविक बल नहीं, किन्तु आत्मिक बल की आवश्यकता है । संसार के अब तक के इतिहास से यही सिद्ध होता है कि जो आज अपने को न्यायशाली कह पाशविक बल का उपयोग कर अन्यायिकों का दमन करते हैं वे स्वयं समय पाकर बल का उपयोग कर अन्यायी हो जाते है । गांधी के मार्ग में यह बातें हो ही नही सकती ।'' महात्मा गांधीजी के विचार जितने शक्तिशाली हैं उतने ही वे शाश्वत भी है । उन विचारों को हर युग का मनुष्य आत्मसात कर अपना जीवन आदर्शवत बना सकता है तथा समाज एवं संपूर्ण मानवजीवन का कल्याण कर सकता है ।

गांधी विचारों की प्रासंगिकता को लेकर जितने भी सवाल उठाए जाते है उन सारे सवालों का जवाब समय ही देगा । आज मनुष्य भोतिक सुविधाओं के पिदे लगकर आत्ममग्न हो गया है । संकुचित वृत्ति के कारण तथा स्वार्थी प्रवृत्तियों ने राश्ट्रीयता तथा वैश्विक भावना को तिलांजली दी है । संघर्ष की परिस्थितीयों से मनुश्य उब चुका है । ऐसे समय में सारे विश्व को महात्मा गांधीजी के विचार ही प्रेरक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होंगे । महात्मा गांधीजी का जन्म एक दैवी अवतार है जिसकी छाया में विश्व मानवता का सपना साकार होगा । मनुष्य–मनुष्य में पारस्परिक साहचर्य एवं स्नेह बढेगा । हिंसा के स्थान पर अहिंसा के माध्यम से दिलों को जीता जाएगा । संकीर्ण या स्व–सुख की कामनाऍ मनुष्य के विकास को अवरुद्ध करेगी । मनुष्य त्याग एवं उदारता में अटूट विश्वास रखेगा । अंतःकरण की शुद्धता, आचरण की मर्यादा, परहित की भावना, विचार और कर्म मे एकता आदि मूल्यों में वृध्दी होगी । संक्षेप में वर्तमान तथा भविष्य में गांधी विचारों के अनुकरण में मानव का शाश्वत कल्याण छिपा हुआ है। कहना न होगा कि गांधी विचार हमेशा प्रासंगिक रहे हैं और रहेंगे ।

निष्कर्ष :

सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित राष्ट्रीय भावना की प्रासंगिकता विविध पहलुओं के साथ देखी जाती है । उनके सभी नाटक तथा नाटकों में चित्रित हुए विचार निश्चित कही प्रासंगिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं । परिवेश कोई भी हो, उसमें चित्रित हुई घटनाऍ एवं प्रसंग हमें वर्तमान युगीन समस्याओं की याद दिलाते हैं । सेठ गोविंददास के पात्र भले हीवह ऐतिहासिक एवं पौरिणक क्यों न हो, युगीन संदर्भों के साथ वर्तमान से जुडे हुए है । जाति एवं वर्ण व्यवस्था आदि समस्याऍ सिर्फ प्राचीन युग में ही नहीं बल्कि वर्तमान युग में भी देखी जाती है । जाति एवं वर्णव्यवस्थथा को खत्म करने के लिए उन्होंने जिन उपायों की चर्चा की है उसकी आवश्यकता वर्तमान युग में भी है । सांप्रदायिकता और उससे जूडे विवादों को मिटाने की कोशिश सेठ जी ने जिस साद्गी से की है उसके महत्व को किसी भी युग में नकारा नहीं जा सकता ।

सेठ गोविंददास ने अपने नाटकों के माध्यम से राजनीति में प्रविष्ट अपप्रवृत्तियों तथा उसके दुष्परिणामों को चित्रित किया और दुषित राजनीति को केंद्र में रखकर उसमें सुधार की पहल की है । राजनेताओं के चरित्र को लेकर जिस तरह की चर्चाऍ होती रही हैं उसमें सुधार लाने हेतु महात्मा गांधीजी के विचारों का आदर्शवादी रुप प्रस्तुत कर राजनीति में गांधी विचारों की आवश्यकता पर बल दिया है । हमारे देश में जाति, भाष, प्रांत, वर्ण आदि में विविधता पायी जाती है । संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से विविधता वाले इस देश में सामाजिक दृष्टि से एकता प्रस्थापित करने की सेठ जी की कोशिश निश्चित ही प्रशंसनीय है । देश में जब तक विखंडीत प्रवृत्तियॉ रहेंगी, राष्ट्रीय उन्नति में वे बाधक बनेंगी । इसी बात को ध्यान में रखकर सेठ जी ने उदारवादी दृष्टिकोण तथा नैतिक मूल्यों में आस्था रखनेवाले पात्रों का सृजन कर राष्ट्रीय ऐक्य स्थापित करने की कोशिश की है । इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रीय एकता का अभाव इस देश की सबसे बडी कमजोरी रही है । सेठ जी ने उस दिशा में किया प्रयार आज भी अनुकरणीय है ।

राष्ट्रीय विकास में मानवीय गुणों का विकास महत्वपूर्ण होता है । इसी कारण महात्मा गांधीजी की तरह सेठ गोविंददासजी ने व्यक्ति स्वातंत्र्य का आग्रह किया है । वे मानव को शक्ति व सत्ता का सर्वोच्च कोश मानते थे । मानवी गुणों का विकास सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिवर्तन को प्रभावित कर सकता है इस बात को ध्यान में रखकर सेठ जी ने मानवीय गुणों के विकास की आवश्यकता को अधोरेखित किया है । स्वाधीनता आंदोलन में देशवासियों के मन में जिस तरह के देशभक्ति की भावना प्रबल हो उठी थी उसी तरह की राष्ट्रीयता की भावना वर्तमान युग में भी महसुस की जा रही है । आज हर कोई आत्ककेंद्रित बन कर राष्ट्रीय संपत्ती को लूट रहा है । ऐसी परिस्थितीयों में सेठ जी के पात्र हमारे सम्मुख देशभक्ति का आदर्श प्रस्तुत करते हैं । सामाजिक सुव्यवस्था और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए आर्थिक संपन्नता के साथ–साथ आर्थिक समानता की पहल उन्होंने की है । अमीर और गरीबों में बड रही खाई तथा आर्थिक रुप से गरीबों का हो रहा शोषण आर्थिक विषमता का ही द्योतक है । श्रम और अर्थ के असमान विभाजन के कारण हमारा देश अपेक्षित उन्नति नहीं कर रहा । सेठ गोविंददास ने अपने नाटकोंमें आर्थिक विसंगतियों के मार्मिक चित्र हमारे सम्मुख रख कर वर्तमान युग में आर्थिक समानता की आवश्यकता पर बल दिया है ।

सेठ गोविंददास का संपूर्ण साहित्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है । सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन की दृष्टि से उनके विचारों

की उपादेयता निश्चित ही महत्वपूर्ण है । नाटकों में चित्रित हुए पात्रों के विचार सांस्कृतिक विकास के लिए उपयोगी सिद्ध होनेवाले हैं । राष्ट्र के विकास में सांस्कृतिक मूल्यों का अलग महत्व होता है । ऐसी स्थिती में सेठ जी के नाटकों में चित्रित हुए सांस्कृतिक विचारों की उपोदयता अलग विशेषता रखते हैं । इस भौतिक युग में विज्ञान ने मनुष्य को उन्नति के शिखर पर तो पहूँचा दिया किंतु उसके हाथ में विनाश के ऐसे अस्त्र भी दिए हैं जिसके कारण मानवता खतरे में आयी है । ऐसी स्थिती में संकुचित भावना छोड कर सेठ जी के पात्र विशाल दृष्टिकोण को अपनाकर विश्वबंधुता का संदेश देते है । युद्धजन्य त्रासदियों से अगर विश्व को बचाना है तो विश्वबंधुता के अलावा दूसरा कोई पर्याय नहीं है । महात्मा गांधीजी के विचार भारत को ही नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए प्रेरक एवं मार्गदर्शक रहे हैं । सेठ गोविंददास का हर नाटक गांधी विचारों का प्रेरक है । कहना गलत नही होगा कि गांधी विचारों में इतनी शक्ति है कि उसमें समस्त मानव का शाश्वत कल्याण छिपा हुआ है । अतः कहना होगा कि सेठ गोविंददास के नाटकों में चित्रित हुए राष्ट्रीय भावना के विविध पहलु प्रासंगिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं । राष्ट्रीय भावना से संबंधित उनके विचार वर्तमान युग में ही नहीं बल्कि भविश्य में भी उपयोगी सिद्ध होंगे इसमें संदेह नहीं ।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net